

STELLA ARCHITECTS



ॐ गुरुं नि उ नयय ॥ त म न् ॥



एतद्देवनेरुनेयाति २ यावज्जनहुं नमी २ यालि याति २ यो जनकः कथं नमूना १ दि नमो नमः  
मध्यमे नावमरु सा का गननके अथापुन अधिंको नाभा वनो सा प्रभा पाये को अथाका १ अधिवा  
साधनाग एनवाग नको वाग अदिनगगि कुनि या गा वार्ग सुनिके या विद्युने सा को यदा को  
द या या वा वया नि यक क्रमा वा य ना वा व ॥ १ ॥ कि कट मी दु किं ला वं न सो धं अक स को न सो म द  
हं न अया भा ग ला सा नो यो सा का क नो ज मे ३ ए २ हा ये नी य क न को १ इ पु थो ॥ १ ॥ न न न म नो ने ह  
अ नो यो ॥ २ ॥ को सु स भ नो ॥ १ ॥ १ ॥ या न ला न गि २ म न व ने या व को स म थो १ ॥ अ ग नु क था ॥  
विमम अथ गो ध विमम मी १ ॥ १ ॥ १ ॥

सादर वनि या के ॥ १ ॥ मी २ म न व न न गी १ ॥ १ ॥



नवातीतव, साश्वतीतव, द्वितीयाकुटुम्बानेकेत्यङ्गना ॥ ३ ॥ संप्रसक्तस्य सुदनि विषमकृतया ॥



(जा) कासितु तवर्षे जवक् सप्तमिना जाति सिन्धु नवर्षे साक्षाद गच्छति अपि रुत विधत्ता  
 कासितु रुक्मा सिंहे रुक्मा सोम मूर्ग म कल जय मना सर्व सिद्धार्थ कान्ती सेला क पूजा ॥ ३३ ॥  
 रुय रुने देव दद्यात मायु ॥ ॥ रुसा ॥ ॥ अविद्या नाकि  
 कां ह मनि कलि ला क् ज्ञाने ला अ ॥ नित्या नाकि विदया  
 मालिनी सुन्द नाति पि विद्या ध्या वि काष्ठ क  
 दाद ना न् षरु ग पूर्व या भा टा ॥



ग्रन्थ मरु कलि

ASHA ARCHIVES

। 866

I